मध्यम क्षेत्रीय विद्युत समिति
यू.प.के.

अन्त - 23
जनवरी 2012 - मार्च 2012

सम्पादकीय

परिचय क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई में सदस्य सचिव (प.ु.) का पदार्पण ग्रहण करने के पश्चात कार्यालय की रूपरेखा हिंदी गृह पत्रिका 'विद्युत दर्पण' के माध्यम से साफ़सफाइ करते हुए मुझे प्रसन्नता रही है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से 'ख' क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालयों में वर्ष 2010-11 के दौरान राजभाषा नीति के उल्लंघन कार्यान्वयन तथा हिंदी में किए गए केंद्र कार्य निम्नलिखित के लिए फ़ाइलिस्मिटी को प्रथम पुरस्कार से समाधानित किया गया। सभी आयोजनों एवं कर्मचारियों के साथिक प्रयास से यह सफलता प्राप्त हुई है। इस उपलब्धि के केंद्र कार्य निम्नलिखित के लिए आयुक्त, केंद्रीय, नई दिल्ली ने कार्य का संचालन उत्तीर्ण किया।

कार्य का स्वरूप बाहे भी हो, हम जब अपना कार्य कर्त्तव्यिक के संचालन करते हैं, उनसे रूचि लेते हैं, नियुक्ति से एवं निम्नलिखित से पूर्ण करते हैं, तो हमें कर्त्तव्यिक का अनुयाय आन्दोलन मिलता है। यह भी एक सर्वोत्तम पुरस्कार है।

सु.व. टाकसांडे
सदस्य सचिव (प.ु.)

हार्दिक क्वाई

श्री मनमोहन सिंह, सदस्य सचिव, प्रशिक्षित न्यायिक की केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, नई दिल्ली में सदस्य (ड.स्टी.के.) के पद पर प्रतिनियुक्ति पर नियुक्ति होने पर प्रशिक्षित न्यायिक परिवार की ओर से आपका हार्दिक अभिनंदन।

हार्दिक स्वागत

श्री सु.व. टाकसांडे, सदस्य सचिव (प.ु.) ने दिनांक 1 मार्च 2012 से प्रशिक्षित न्यायिक, मुंबई में कार्य-भार ग्रहण किया। प्रशिक्षित न्यायिक परीक्षा में आपका हार्दिक स्वागत।
बिटिया का प्यार
एक पत्र पत्री की हाल ही में शायद हुई और वे अपने खुद के बंगले में रहने लगे। शायद के उपलब्ध समय में बंगले में एक पारिवारिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसे शुरू दोनों के माता पिता भी भाग लेते थे। वह दमकल ने अपने कमरे के रुपान्तरण में यह निश्चित किया कि यदि कोई दुरुस्त हो, कमरे का दरवाजा खोल-खाते तो हम दरवाजा नहीं खोलेगे, वाहे करने के बारे में दोनों भी हो। शायद जीवन में सबसे सुसंगत रहने के के दरवाजे खोलने को अनुमति दी। दोनों ने दुख की सवारी की और देखा और पिछले सुने। कुछ देर बाद देखा कि दरवाजा खोलने की आवश्यकता नहीं। इसका ब्रह्मेते के पताके आवश्यक दे रहे थे। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। दुख की आवश्यकता में आया था, उसने दुख के समाप्त में सवार कहा, “खोलेंगे न दरवाजा। बाहर आएंगे तो दरवाजा खोलेगे।” दुख ने बात मानी। दुख ने दरवाजा खोला।

इस बात को बसी और अंत में दुख को दो बच्चे देखे - पहला बेटा और बाहर बेटी। बेटी के नामकरण का कार्यक्रम उसके पताके ने बड़े धूमधाम से किया। मेमानों में से एक ने पूछा कि अपने बेटे का नामकरण, जबरदस्ती भी इतने धूमधाम से नहीं मणा था, फिर कैसे की बेटी का। ऐसा क्या? जवाब मिला - यह बेटी ही है जो हमारे हिए दरवाजा खोलेगी।

(8 मार्च महिला दिवस पर सभी बेटियों को सुनकरक्षण)